भाषा शिक्षण
(विविध विमर्श)

संपादक
प्रसादराव जामि

भाषा शिक्षण
(विविध विमर्श)

संपादक
प्रसादराव जामि

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भाषा शिक्षण (विविध विमर्श)

संपादक

प्रसादराव जामि

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३

ISBN 978-81-19584-19-2

जे.टी.एस. पब्लिकेशन

बी–508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली –110053

मो. 08527460252,9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद,

उत्तर प्रदेश, पिन -201102

मूल्य : १२०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

संपादक की कलम से... ....

यूं तो भाषा भावों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। तथापि कुछ भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से भी असंभव होती है जैसे हर्षातिरेक, अगाध करुणा, आश्चर्य आदि। तथापि हमारी भाषा जगत वंदनीय है। जो सम्पूर्ण विश्व को एक साथ जोड़कर एक मंच पर लाने का कार्य करती है। इस भाषा का शिक्षण भी अनुपम है। जिसके विविध विमर्श हमें अपने चारों ओर देखने को मिलते हैं। इसका स्वरूप ईशरूपवत् ही अति विराट् है। जिसे संकलित कर पाना स्वयं में दुर्जेय कार्य है।

सुदीर्घ समयावधि से हृदय में एक कामना ने जन्म लिया कि, किसी पुस्तक का संकलन किया जाए। विद्वानों के विचारों को समेटा जाए। सागर से मोतियों के समान सृष्टि से ज्ञान के मुक्ता बटोरे जाएं। इसी चिंतन ने हृदय को भाषा के चरणों में नतमस्तक कर दिया और भाषा की विविध कलायें, रूप, गुण, और विचार मूर्तित हो उठे। फलतः उन्हें समेटने की उत्कंठा प्रबल हो गई जिसने संकेत दिया "भाषा शिक्षण (विविध विमर्श)" के रूप में और ईश्वर की अनुकम्पा से मेरे पुस्तक बंध का नामकरण साकार हुआ।

इस पुस्तक का संकलन हमारे लिए आनंदमयी क्षणरूप है जो जन सामान्य को नई दिशा दृष्टि देने में सक्षम होगा। इस पुस्तक के माध्यम से समाज नये आयामों के आलोचनात्मक स्वरूप से संयुक्त हो पाएगा । हालांकि वैचारिक दिशाओं का मापन करने का प्रयास बाल हठ है, तथापि कर्म मानव कर्तव्य, फल ईश्वर की इच्छा है। प्रस्तुत बंध में संकलित विचार शैक्षिक समाज के लिए अद्भुत और उपयोगी सिद्ध होंगे। इसी कामना के साथ हम हर्ष का अनुभव करते हुए आपके सहयोग की अपेक्षा करते हैं तथा अपनी प्रत्येक त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

इत्यलम्

प्रसादराव जामि

25.	**प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण** डॉ. षेक जुबेर अहमद	268
26.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का महत्व** डॉ. रश्मी बी.वी.	273
27.	**त्रिभाषा सूत्र : शैक्षिक सन्दर्भ** शालिनी मिश्रा	277
28.	**केरल में हिंदी के अध्ययन का स्वरूप** डॉ.अपर्णा यू नायर	286
29.	**भारतीयता और हिन्दी** उषा श्रीवास्तव	289
30.	**छात्रों को भाषा शिक्षण** रजिया सुलताना	294
31.	**भाषा विकास और मनोविज्ञान** डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर	297
32.	**भाषा शिक्षण में भाषा और संचार की बाधाएं** डॉ. हेमन्त सिंह कंवर	310
33.	**भारतीय भाषा, मातृभाषा एवं इसका महत्व** डॉ. मुकेश कुमार	320
34.	**शिक्षक शिक्षा में हिन्दी भाषा शिक्षण का महत्व** विवेक कुमार बत्सल, डॉ. रवि कुमार	329
35.	**हिन्दी के बढते कदम** डॉ. सुधा सिन्हा	338
36.	**शिक्षण शास्त्र में शिक्षक की भूमिका** ज्योति अजय सिंह	340
37.	**भाषा शिक्षण सर्वांगीण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है** डॉ. एस.ए. मंजुनाथ	347
38.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में संस्कृत शिक्षण**	353

	डॉ. लूनेश कुमार वर्मा	
39.	**भाषा शिक्षण और सांकेतिक भाषा** डॉ. शेख शहेनाज अहमेद	361
40.	**हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि विश्व में** डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे	367
41.	**हिंदी साहित्य में पुनर्जागरण एवं राष्ट्रवाद** डॉ0 संगीता मिश्रा	370
42.	**भारतीय ग्रामीण संरचना के आधारभूत परिवर्तन** हिंदी हिंदू और हिंदुस्तान डॉ निधि भारद्वाज, डॉ ज्योति भारद्वाज	376
43.	**विश्व मे हिन्दी एवं हिन्दी साहित्य का महत्व** संगीता सागर	383
44.	**प्राथमिक स्तर पर भाषा का महत्व** संजय शर्मा "वत्स"	388
45.	**भाषा शिक्षण और कला अभिव्यक्ति** डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव	393
46.	**भाषा शिक्षण विभिन्न विधियाँ** सीमा सेखड़ी	402
47.	**विद्यार्थी जीवन में : "भाषा शिक्षण शास्त्र" का अर्थ तथा उनकी महत्ता का वर्णन** नाबम यामी	403
48.	**मातृभाषा हिन्दी की महत्ता** डॉ सुरेश लाल श्रीवास्तव	414
49.	**भाषा शिक्षण (हिंदी के संदर्भ में)** डॉ चंद्रिका प्रसाद दीक्षित	417
50.	**साहित्य दर्पणे रस विवेचनम** सौम्यरंजन बड़पंडा	423
51.	**संस्कृतभाषायांपुँथिविद्यायाः**	434

39

भाषा शिक्षण और सांकेतिक भाषा

डॉ. शेख शहेनाज अहमेद
हिंदी विभाग प्रमुख
हु. जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, नांदेड - 431802

भाषा शिक्षण एक प्रक्रिया है अर्थात एक माध्यम है । इसके अंतर्गत शिक्षार्थी को किस प्रकार से पढना-लिखना सिखाया जाए इस बात पर बल दिया जाता है । इसमें बालक भाषा का समझ के साथ प्रयोग करना सीखाता है । शिक्षणार्थी की भाषा को उनके समाज के अनुरूप ढालने के लिए भाषा शिक्षण आवश्यक होता है । विद्यार्थी विभिन्न संदर्भ में सफल हो सके । बोलकर तथा लिखकर अपने भाषों एवं विचारों को व्यक्त करने की योग्यता प्राप्त करना । विद्यार्थियों को भाषा के विविध रूपों से परिचित कराया जा सके।

इस तरह भाषा बिना हम शिक्षा के किसी भी क्रियाकलाप की कल्पना नही कर सकते । इसलिए भाषा शिक्षण का महत्व अपने-आप में बढ जाता है । भाषा संस्कृती का आधार, साहित्य का आधार, सामाजिक प्रक्रिया का आधार, मनुष्य के चिंतन का माध्यम व संप्रेषण का भी आधार है । भाषा से हमारा बौध्दिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक विकास हुआ है ।

भाषा को एक सांकेतिक साधन कहा गया है । जब तक भाषा की भिन्न - भिन्न ध्वनियों का अविष्कार नही हुआ था तब तक हम अपने विचारों का प्रकट करने के लिए भिन्न भिन्न संकेतो को प्रयोग में लाते थे जैसे सिर के ऊपर, नीचे अथवा दायें बाए हिलाना और नेत्रों को टेढे, तिरछे धुमाना । परंतु केवल आंगिक संकेतो के सहारे हम अपने सभी विचारों को ठिक केवल आंगिक संकेतों के सहारे हम अपने सभी विचारों को ठिक प्रकार से प्रासंगिक संकेतों के सहारे हम अपने सभी विचारों को ठिक प्रकार से अभिव्यक्त नही कर सकते । इस लिए कालांतर में भाषा का अविष्कार हुआ ।

पहले हम जब अपने विचारों को प्रकट करना चाहते तो आंगिक संकेतों का प्रयोग करते ये परंतु बाद में भाषा के अविष्कार के पश्चात भाषा में माध्यम के द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होने लगी। भाषा भी एक प्रकार की संकेत ही है परंतु अंतर केवल इतना ही है कि यह शारीरिक अथवा आंगिक संकेत न होकर, हवन्यात्मक संकेतों की काई सीमा नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त आंगिक संकेतों के द्वारा, कुछ गिने चुने भाषों का ही स्पष्टीकरण हो सकता है जो मनुष्य को एक सीमित क्षेत्र में रहने के लिए बाध्य करते है। अपने परम्परागत विचारों की अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने की बात तो दूर रही, हम अपने ही समय के लोगों के विचारों को इत शारिरिक संकेतों द्वारा प्रकट नही कर सकते। पंरतु ध्वनात्मक संकेतों मे वह क्षमता है कि अनंत काल तक, मानव के कोटि-कोटि मनोभावों को सुरक्षित रखते हुए, एक युग से दूसरे युग तक, पहुचाते रहे। आज मानव ने ज्ञान -विज्ञान में जो इतनी प्रगति की है, प्रति दिन जो भिन्न- भिन्न अनुसंधान तथा अविष्कार है। रहे है, वह भाषा के ध्वन्यात्मक संकेतों के बिना कभी संभव न होता। अंत में हम कह सकते है कि भाषा ज्ञान के असीम अंश को ससीम बनाती है तथा निराकार विचारों को साकार रूप देती है।

पश्चिमी समाजों में सांकेतिक भाषा का दर्ज इतिहास 17 वी शताब्दी में एक दृश्य भाषा या संचार की विधि के रूप में सुरू होता है, हालांकि हाथ के इशारों का उपयोग करके संचार के रूपों का संदर्भ 5 वी शताब्दी ईसा पूर्व ग्रीस से मिलता है। सांकेतिक भाषा पारंपारिक इशारों, नकल, हाथ के संकेतों, और उंगलियों की वर्तनी की एक प्रणाली से बनी है, साथ ही वर्णमाला के अक्षरों को दर्शाने के लिए हाथ की स्थित का उपयोग भी किया जाता है। संकेत केवल व्यक्तिगत शब्दों का ही नाही बल्कि संपूर्ण विचारों या वाक्यांशों का भी प्रतिनिधित्व कर सकते है।

अधिकांश सांकेतिक भाषाएँ प्राकृतिक भाषाएँ है जो अनके निकट उपयोग की जाने वाली मौखिक भाषाओं से निर्माण में भिन्न होती है, और संवाद करने के लिए मुख्य रूप से बधिर लोगों द्वारा उपयोग की जाती है। दुनिया भर में कई सांकेतिक भाषाएँ स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है, और किसी भी पहली सांकेतिक भाषा की पहचान नही की जा सकती है। हस्ताक्षरित प्रणालियों और मैन्युअल वर्णमाला दोनों दुनिया भर में पाए गए है। 19 वी शताब्दी तक, ऐतिहासिक सांकेतिक भाषाओं के बारे में हम जो कुछ भी जानते है, वह मैन्युअल

वर्णमाला तक ही सीमित था, जिसका आविष्कार सांकेतिक भाषा के दस्तावेजीकरण के बजाय मौखिक से सांकेतिक भाषा में शब्दों के स्थानांतरण की सुविधा के लिए किया गया था।

सांकेतिक भाषा के सबसे पहले लिखित संदर्भों में से एक पांचवी शताब्दी ईसा पूर्वी से है, प्लेटो के क्रैटिलस में, जहां सुकरात कहते है : "अगर हमारे पास आवाज या जीभ नहीं होती, और हम एक-दूसरे को चीजें व्यक्त करना चाहते, तो क्या हम अपने हाथों, सिर और शरीर के बाकी हिस्सों को हिलाकर संकेत बनाने की कोशिश करते है, जैसे आजकल मूक लोग करते है।" 1 अंग्रेजों में कम से कम 10 वीं शताब्दी से यूरोप में कई धार्मिक आदेशों द्वारा "मठवासी" सांकेतिक भाषाओं का उपयोग किया जाता था। हालांकि ये सच्ची सांकेतिक भाषाएँ नही है, बल्कि संकेतात्मक संचार की अच्छी तरह से विकसित प्रणालियाँ है।

ऐसा लगता है कि 1492 से पहले मूल अमेरिकी समुदायों में प्लेन्स इंडियन साईन लैंग्वेज एक व्यापक भाषा के रूप में मौजूद थी, जिसका उपयोग व्यापार और संभवतः समारोहों कहानी कहने और बधिर लोगों द्वारा दैनिक संचार के लिए भी किया जाता था।" 2 इस तरह के हस्ताक्षर के विवरण से संकेत मिलता है कि ये भाषाएं काफी जटिल थी, क्योंकि कै बेजा डी वेका जैसे खोजकर्ताओं ने अनके और मुल अमेरिकियों के बीच विस्तृत संचार का वर्णन किया था जो संकेत में आयोजित किये गये थे। 1500 के दशक में, एक स्पेनिश अभियान दल, कैबेजा डि वेका, ने संकेतों का उपयोग करके आधुनिक फ्लोरिडा के पश्चिमी भाग में मूल निवासियों को देखा। और 16 वीं शताब्दी के मध्य में कोरोनाडो ने उल्लेख किया गया कि, टोकावा के साथ संकेतों का उपयोग करके संचार अनुवादक के बिना संभव था।

ब्रिटेन में "सांकेतिक भाषा का सबसे पहले ठोस संदर्भ 1575 में थॉमस टिलसे नामक नामक एक बधिर व्यक्ति की शादी से मिलता है। 3 ब्रिटिश सांकेतिक भाषा के वंशजो का उपयोग पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश भारत में बधिर समुदायों द्वारा किया गया है।

ऐसा लगता है 1500 और 1700 के बीच, तुर्की ओटोमन अदालत के सदस्य हस्तांक्षरित संचार के एक रूप का उपयोग कर रहे थे। कई पसंदीदा नौकर

बहरे थे, जैसा कि कुछ लोग तर्क देते है, उन्हें अधिक शांत और भरोसेमंद माना जाता था। हालाकी कई राजनायिको और अदालत के अन्य सुनवाई सदस्यों ने भी इस हस्ताक्षर प्रणाली के माध्यम से एक दुसरे से सीखा और संवाद किया, जिसे अदालत के बधिर सदस्यों के माध्यम से पारित किया गया था।

फ्रांस में, पुरानी फ्रांसीसी सांकेतिक भाषा पेरिस एक छोटे से बधिर समुदाय का घर था जो आपस में हस्ताक्षर करते थे। इसका संदर्भ "एल अब्बे चार्ल्स मिशेल डे ल 'एपी' ने दिया था। जिन्होंन्हे 18 वी शताब्दी में पेरिस मे बधिरो के लिए पहला स्कुल बनाया था। उन्होंने अपनी स्वयं की मैन्युल वर्णमाला को परिभाषित किया और फ्रांसीसी व्याकरण के संकेतों को संश्लेषित किया। समुदाय के बीच लगातर उपयो के साथ ये दो स्रोत फ्रेंच सांकेतिक भाषा में विकसित हुए।'' 4 बधिरों के लिए पहले अमेरिकी स्कूलों में फ्रांस के शिक्षकों की उपस्थिति के कारण अमेरिकी सांकेतिक भाषा काली हद तक फ्रेंच सांकेतिक भाषा पर आधारित है।

ऐसा माना जाता है कि कहा सांकेतिक भाषाएं उन छोटे समुदायों में अनायास ही विकसित हो गई है जहाँ बड़ी संख्या मे बधिर सदस्य है। मार्था वाइनयार्ड, मैसाचुसेटस, संयकुत् राज्य अमेरिका में एक द्वीप 17 वी शताब्दी के अंत में बहरेपन का कारण बननेवाले जीन वाले लोगों द्वारा बसाया गया था। द्वीप पर सीमित बाहरी संपर्क और उच्च अंतरविवाह के कारण द्वीप पर बधिर व्यक्तियों का घनत्व बढ गया, जो 1840 के आसपास चरम पर था। यह वातावरण उस चीज के विकास के लिए आदर्श साबित हुआ जिसे आज मार्था वाइनयार्ड साइन लैंग्वेज के रूप में जाना जाता है, जो द्वीप पर सुनने और बधिर लोगों द्वारा समान रूप से उपयोग किया गया जब तक कि बाहरी दुनिया के साथ मिश्रण बढने से द्वीप पर बहरेपन की घटनाएं कम नही हो गई। उन्होंने एक सांकेतिक भाषा बनाई जिसमें उस क्षेत्र से संबधित विशिष्ट संकेत थे, जैसे देशी प्रकार की मछलियाँ और जामुन। स्कूली आयु वर्ग की लगभग सभी आबादी एएसडी में छात्र बन गई, जिसके कारण अमेरिकी सांकेतिक भाषा और मार्था की वाइनयार्ड सांकेतिक भाषा का एक-दुसरे पर पारस्पीएक प्रभाव पड़ा।

बीसवी सदी के अंत मे शिक्षकों और शोधकर्ताओं ने भाषा अधिग्रहण के लिए सांकेतिक भाषा के महत्व को समझना शुरू कर दिया। "1960 में जब

भाषाविद विलियम स्टोको ने सांकेतिक भाषा संरचना प्रकाशित की, तो इसने इस विचार को आगे बढ़ाया कि अमेरिकी सांकेतिक भाषा एक पूर्ण भाषा है। अगले कुछ दशकों में सांकेतिक भाषा को एक वैध प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया और स्कूल सांकेतिक भाषा पर प्रतिबंध लगाने के बजाय संपूर्ण संचार के दर्शन पर स्थानांतरित हो गए।'' 5

अध्ययनों से पता चलाए है कि भाषा में देरी होने पर मस्तिष्क की स्थूल भाषाई संरचनाओं का विकास प्रभावित हो सकता है।'' एक अध्ययन से पता चलता है कि ''अधिग्रहण की एक उम्र होती है जो वयस्कों की व्याकरण को समझने की क्षमता को प्रभावित करती है जो इस बात पर आधारित होती है कि क्षमता को प्रभावित करती है जो इस बात पर आधारित होती है कि उन्हें सांकेतिक भाषा से कब परिचित कराया गया था।'' 6 डेटा अब दिखाता है कि जो बच्चे जितनी जल्दी हो सके सांकेतिक भाषा से परिचित हो जाते है, वे उन बच्चों की तुलना में अंग्रेजी पढ़ने में बेहतर होते हैं जो सांकेतिक भाषा से परिचित नहीं होते है।

उपर्युक्त अध्ययन से हमे पतता चलता है कि भाषा का महत्व एक अन्य दृष्टि से भी देखा जा सकता है। वह समाज, जाति अथवा राष्ट्र उन्नत समझा जाता है, जिसका साहित्य उच्च कोटिका हो। भारतीय समाज कितना उच्च था, कितना प्रगतिशील था, इसका अनुमान इस के उपलब्ध साहित्य से लगाया जा सकता है। जिस जाति के पास वैदिक साहित्य उपनिषद ग्रंथ, दर्शन शास्त्र, रामायण, महाभारत, भास, कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास तथा जयशंकर प्रसाद जैसे महानुभवों की कृतियाँ हो, उस जाति की विचारों संबंधी श्रेष्ठता को भला कौन स्वीकार न करेगा। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है अर्थात सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब हमें साहित्य में उपलब्ध होगा। समाज के जैसे विचार होंगे भावनाएं होंगी, वैसा ही उनका साहित्य भी होगा। परंतु यह सब भावनाए और विचार कौन से माध्यम के द्वारा अभिव्यक्त किए जा सकते है ? भाषा द्वारा के द्वारा ही हम इन सब का आकलन कर सकते है होगी, वैसा ही उनका साहित्य भी होगा। बिना भाषा के माध्यम के हम इतने सुंदर तथा उच्च कोटी के साहित्य का सृजन करने में समर्थ न हो सकते। उन्नत साहित्य से हमारा तात्पर्य है, भाषा का व्यवहार सुंदर रूप में तथा विविध शैलियों में किया जाए।

भाषा शिक्षण (विविध विमर्श) (ISBN 978-81-19584-19-2)

संदर्भ :-
बॉमन, डर्कसेन (2008) अपनी ऑखे खोलो मिनेसोटा विश्व विद्यालय, ISBN 978.0.8166.4619.7
नीलसन, कि (2018) संयुक्त राज्य अमेरिका का एक विकलंगाता इतिहास- बोस्टन, मैसा, दुसेटस, बीकन प्रेस ISBN 978.0.08070.2204.7
कैबजा डी वेका -सांकेतिक भाषा अध्ययन - 132.165
फ्रेंच सांकेतिक भाषा : अपने आपने एक भाषा - नवंबर 2015
हाथ और आवाज : संचार संबंधी विचार - जुलाई 2010 बंधिरों पर नाटक
गोल्डिन -मीडो, सुसान (नंवबंर 2017) - सीखने की अस्मताए अनुसंबंध औरा अभ्यास पृ 222-229
संयुक्त राज्य अमेरिका मे सांकेतिक भाषा का इतिहास
पहली पूर्ण सांकेतिक भाषा बाइबल
मातृ एवं शिशु स्वास्थ जर्नल - 2021

भाषा शिक्षण (विविध विमर्श) (ISBN 978-81-19584-19-2)

40

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि विश्व

डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे
मु: कोरियाल पोस्ट सावली ता: कमलनगर
जिला : बीदर-५८५४१७ राज्य: कर्नाटक

भारतीय लिपि परंपरा ब्रह्मी लिपि से उगम हुआ आज
ो लिपियों में सबसे विशेष महत्व है, जिनमें देवनागरी लिपि
। इसका कारण है कि ध्वनियों में वैज्ञानिक रूप से प्र
शक्तिवाली देवनागरी लिपि है। वस्तुत: भाषा की वाचन शै
को मिलता है कहीं पर भी ध्वनी में बदलाव नहीं होता
उच्चारण किया जाता है। इसलिए इस ध्वनि का उपयोग
जैसी प्राचीन भाषाओं के साथ हिन्दी,मराठी,कोंकणी
भाषाओं के साथ अनेक जनजातीय बोलियों के साथ ए
हिन्दी और लिपि देवनागरी में बहुत बड़ी ताकत है। ल
अपनी ताकत की दावेदारी पेश कर के विकसित बनी

हिन्दी भाषा को आगे बढाने विश्व के
देवनागरी लिपि से सूचना प्रद्योगिकी क्षेत्र में क्रान्ति
भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय एकता का
की गुणवता को राष्ट्रीय नायकों ने महत्ता को रे
संविधान के अनुच्छेद ३४३ भाग – {१} के अ
लिपि के रूप में देवनागरी को अंगीकृत किया
जनमानस की गतिशील बनी हुई है। एक सां
अक्षरों व्यंजनों में तर्कसंगत वैज्ञानिक क्रम-वि
उतरने के लिए देव विशिष्ट है।
का प्रयोग जैसा उ ा जाता है। वै